वानिकी अनुसंधान परियोजनाओं की समीक्षा की

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान में 30वीं अनुसंधान सलाहकार समूह की बैठक आयोजित

जबलपुर (नईदुनिया प्रतिनिधि)। उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान (टीएफआरआइ) में नवीन प्रस्तावित एवं संस्थान की अन्य वानिकी अनुसंधान परियोजनाओं की समीक्षा करने 30वीं अनुसंधान सलाहकार समूह बैठक का वस्तुत: आयोजन किया गया। मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ के विशिष्ट वन अधिकारियों ने बैठक के तकनीकी सत्रों की अध्यक्षता की, जिसमें डॉ. पीके शुक्ला सेवानिवृत्त पीसीसीएफ, डॉ. संजय शुक्ला एपीसीसीएफ मप्र, एके पाटिल एमडी एमपीआरवीवीएन, राजेश कल्लाजे सीसीएफ रायपुर आरके वानखेड़े एपीसीसीएफ महाराष्ट्र शामिल थे। बैठक में विभिन्न प्रमुख विज्ञानियों व वरिष्ठ अधिकारी डॉ. नितिन कुलकर्णी, डॉ. एसएस नरखेड़े, डॉ. सुशील कुमार, डॉ. एके हांडा, डॉ. राकेश बाजपेयी, डॉ. एस संबथ, डॉ. एसडी उपाध्याय, प्रो. एमएल खान, डॉ. एसआरके सिंह, मनीष के. विजय, नीरज प्रजापति, सिंघम स्वामी, डॉ. यूएस शर्मा ने भाग लिया।

टीएफआरआइ की वानिकी समीक्षा बैठक में उपस्थित अधिकारी। ● **सौजन्य।**

डॉ. जी. राजेश्वर राव निदेशक टीएफआरआइ ने संस्थान के इतिहास की जानकारी देकर भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद में अनुसंधान परियोजनाओं की स्क्रीनिंग के लिए उपयोग होने वाली कार्यप्रणाली के बारे में बताया। संस्थान की परियोजनाओं के माध्यम से विभिन्न उपलब्धियों की जानकारी देकर उन्होंने विभिन्न हितधारकों के लिए उपलब्ध संस्थान द्वारा जारी योग्य प्रौद्योगिकियों का उल्लेख किया। डॉ. मैत्री कुंडु, समूह समन्वयक अनुसंधान ने संस्थान के अनुसंधान प्रभागों और विभिन्न परियोजना गतिविधियों की जानकारी दी। उन्होंने 13 अक्टूबर 2020 को आयोजित पिछले आरएजी की कार्रवाई रिपोर्ट भी प्रस्तुत की।

डॉ. विमल कोटियाल सहायक महानिदेशक आइसीएफआरई देहरादून ने हितधारकों को लाभान्वित करने के लिए परियोजनाओं के विज्ञानी और तकनीकी पहलुओं पर उचित चर्चा की बात कही। परियोजनाओं के मूल्यांकन प्रक्रिया की विस्तृत व्याख्या करते हुए उन्होंने प्रस्तुत परियोजनाओं में सुधार के लिए सकारात्मक और रचनात्मक प्रतिक्रिया का अनुरोध किया। समिति ने संस्थान की चल रही परियोजनाओं की भी समीक्षा की।

आरएजी में ये नई शोध परियोजनाएं

- सागौन और खमेर के प्रमुख डिफोलिएटर कीट-प्रबंधन के लिए नैनोफॉर्म्यूलेशन का विकास
- नर्सरी और वृक्षारोपण में वन वृक्ष प्रजातियों के विकास और प्रदर्शन पर नैनो-उर्वरक का मूल्यांकन
- सूक्ष्म प्रचारित बांस और सागौन में नर्सरी रोगजनकों के खिलाफ प्रणालीगत प्रतिरोध को प्रेरित करने पादप वृद्धि बैक्टीरिया के साथ जैवकरण
- मध्य प्रदेश के बाघ अभयारण्यों के अंदर घास के मैदानों का सतत प्रबंधन-'वृक्षों के प्रवेश' पर जोर प्रस्तावित की गई।
- बैठक का संचालन व आभार प्रदर्शन विज्ञानी डॉ. फातिमा शिरीन ने किया। बैठक में विज्ञानियों, राज्य वन विभागों, विश्वविद्यालयों और विभिन्न अन्य संगठनों के अधिकारियों सहित लगभग 40 विशेषज्ञों ने वस्तुत: भाग लिया।